साहित्य अकादेमी

भीष्म साहनी जन्म शतवार्षिकी समारोह की रिपोर्ट

दिनांक : 8-10 अगस्त 2015, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित कहानीकार, उपन्यासकार, नाट्य लेखक और अनुवादक भीष्म साहनी के जन्म के एक सौ वर्ष पूरे होने पर संस्कृति मंत्रालय और साहित्य अकादेमी की ओर से शनिवार को भीष्म साहनी जन्म शतवार्षिकी समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन भारत सरकार के माननीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा ने किया।

देश के कोने-कोने से पधारे साहित्य व कलाप्रेमियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भीष्म साहनी पर आयोजित यह कार्यक्रम तो बस एक शुरुआत है। पूरे वर्ष तक उनकी रचनाओं, उनकी यादों को संजोये रखा जाएगा। देश के कोने-कोने में उनकी रचनाओं को कार्यक्रम के माध्यम से याद किया जाएगा। उन्होंने अपने जीवन के अतीत की कुछ घटनाओं को याद करते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन में दो कसमें खाईं। एक तो कभी लॉटरी नहीं खरीदूंगा और दूसरी, महान लोगों की आत्मकथाएँ पढ़ूंगा। मैं जब भी किसी संकट या समस्याओं से घिरा रहता हूं तो उसका समाधान भीष्म साहनी जैसे महान रचनाकारों की रचनाओं में मिलता है।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अगर आवश्यकता होती है तो संस्कृति मंत्रालय भीष्म साहनी के रावलपिंडी स्थित घर को संरक्षित करने का प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि दुनिया की नजर भारत की संस्कृति पर टिकी हुई है। दुनिया भारत की संस्कृति से अपेक्षा कर रही है। हमें इस पर खरा उतरना है। अब वह समय आ गया है कि महापुरुषों की यादों को समारोह के रूप में मनाया जाए और देश की जनता को उससे प्रेरणा मिले।

भीष्म साहनी के भतीजे व मशहूर फिल्म अभिनेता परीक्षित साहनी ने अपने पिता बलराज साहनी व चाचा को याद करते हए कहा कि भीष्म साहनी मेरे पिता के समान थे। उनके अंदर देशप्रेम का भाव कूट-कूट का भरा हुआ था। उन्होंने कहा कि कलाकार दिमागी तौर पर कम काम करते हैं, दिल से ज्यादा काम करते हैं। भीष्म जी भी उसी मिजाज के व्यक्ति थे। भीष्म जी ने मुझे पाला है। मेरा बचपन भीष्म जी के साथ ही गुजरा है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि मैं एक हिंदी का पाठक होने के नाते उनका उपकार मानता हूं कि भीष्म जी ने हिंदी

में लिखा। उनकी मां पंजाबी भाषी थीं। परिवार के सभी सदस्य उर्दू जानते थे। खुद भीष्म साहनी जी अंग्रेजी के अध्यापक थे लेकिन, वे हिंदी में लिखते थे। उन्होंने कहा कि वे काफी सक्रिय थे। वे शांत, सीधे, विनम्र ढंग से काम करते थे। उनका जीवन और लेखन कभी विवाद भरा नहीं रहा। वे बाहर से विनम्रता से काम करते थे और अंदर से दृढ़ता के परिचायक थे।

समारोह में आए अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। जबकि संचालन अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया। मंच पर माननीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री डॉ. महेश शर्मा के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, प्रतिष्ठित अभिनेता परीक्षित साहनी, संस्कृति सचिव नरेंद्र कुमार सिन्हा, संयुक्त सचिव प्रमोद कुमार जैन, वरिष्ठ कथाकार रमेश उपाध्याय उपस्थित थे। इस अवसर पर भीष्म साहनी पर विनिबंध का भी लोकार्पण किया गया।

9 अगस्त को तीन सत्रों का आयोजन किया गया। पहला सत्र भीष्म साहनी जी की स्मृतियों पर आधारित था। जिसमें एम.के. रैना, भीष्म साहनी की पुत्री कल्पना साहनी, केवल गोस्वामी और हर्षी आनंद ने हिस्सा लिया। सत्र में कल्पना साहनी ने भीष्म जी के जीवन से जुड़े दुर्लभ चित्रों के साथ स्मृतियों को साझा किया। जबकि हर्षी आनंद ने उनकी उस चिट्ठी को पढ़कर सुनाया जिसमें उन्होंने अपनी एक रचना का उनके द्वारा विरोध करने पर अपनी सफाई पेश की थी जो बहुत ही मार्मिक थी और साथ-साथ उनकी रचना प्रक्रिया को रेखांकित करती थी।

दूसरा सत्र 'नई कहानी आंदोलन और भीष्म साहनी' पर आधारित था। जिसकी अध्यक्षता नित्यानंद तिवारी ने की और अब्दुल बिस्मिल्लाह, रविभूषण और अजय तिवारी ने अपने-अपने आलेख पढ़े। सत्र को संबोधित करते हुए नित्यानंद तिवारी ने भीष्म जी की कई कहानियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उनकी कहानियों में इतिहास पर नजर रखते हुए वर्तमान में आगे बढ़ने के रास्ते दिखते हैं।

तीसरा सत्र 'भीष्म साहनी के उपन्यास : सांप्रदायिकता, विभाजन और रूढ़ियों का प्रतिरोध' विषय पर केंद्रित था। जिसमें असगर वजाहत, प्रो. गोपेश्वर सिंह और रवींद्र त्रिपाठी ने अपने-अपने विचार रखे।

मशहूर फिल्म निर्देशक गोविंद निहलानी ने कहा कि भीष्म साहनी किसी वैचारिक पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं थे। उन्होंने उपन्यास, नाटक या जो भी कहानियां लिखीं, उसे पूरी

ईमानदारी से बिना किसी आलंकारिक भाषा का प्रयोग किए, लिखा। इसीलिए उनकी रचनाओं में एक सादगी है लेकिन ये सादगी काफी गहराई लिये हुए है।

श्री निहलानी 'भीष्म साहनी : नाटक, रंगमंच और फिल्म के संदर्भ' पर अपने विचार प्रकट कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 'तमस' में क्रोध नहीं बल्कि तात्कालिक मानवीय स्थितियों का विश्लेषण है।

इसी सत्र में मशहूर नाट्य निर्देशक देवेंद्रराज अंकुर ने कहा कि भीष्म साहनी के लिखे सभी छह नाटक यथार्थवादी हैं और उनके मंचन में काफी कठिनाइयां होती हैं। लेकिन, सबसे मजे की बात यह है कि इसके बाद भी इन्हें बार-बार खेला जाता है।

प्रगतिशील आंदोलन और भीष्म साहनी विषय पर चर्चा करते हुए साहित्यकार अरुण कमल ने कहा कि भीष्म जी चाहते थे कि प्रगतिशील लेखक संघ में हर तरह के लेखकों का समावेश हो। उनकी इच्छा यह भी थी कि विचारवाद व पंथवाद से ऊपर उठकर लेखक एक संगठन के अंदर रहे। इस सत्र में राजेंद्र कुमार, सत्यकाम और अध्यक्ष के रूप में मुरली मनोहर प्रसाद सिंह ने भी उन्हें आला दर्जे का संगठनकर्ता और लेखक बताया।

भारतीय भाषाओं में भीष्म साहनी की रचनाओं के अनुवाद को लेकर कन्नड, मराठी, ओडिया और तेलुगु के साहित्यकारों का मानना था कि जिस मात्रा में साहनी जी की रचनाओं का अनुवाद होना चाहिए था, उस स्तर पर नहीं हुआ है।

भीष्म साहनी जन्म शतवार्षिकी समारोह के समापन सत्र को संबोधित करते हुए वरिष्ठ आलोचक पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कहा कि भीष्म साहनी जितने बेहतर इंसान थे उतने ही बेहतर लेखक थे और जितने अच्छे लेखक थे उतने ही अच्छे इंसान थे।

तीन दिवसीय समारोह के अवसर पर आयोजित पुस्तक एवं चित्र प्रदर्शनी भीष्म साहनी के पाठकों द्वारा काफी पसंद की गई। साहित्य अकादेमी की ओर से दिनांक 9 अगस्त को भीष्म साहनी की कहानी 'लीला नंदलाल की' और 10 अगस्त को 'चीफ की दावत', 'माता-विमाता', 'सिफ़ारिशी चिट्ठी' कहानियों का नाट्य मंचन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सभागार में किया गया।

भीष्म साहनी जन्म शतवार्षिकी के अंतर्गत अगला समारोह अमृतसर में जनवरी 2016 में आयोजित किया जाएगा।